आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 5 अंक : 6 फरवरी, 2018 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. बी. आर. छीपा

कुलपति सन्देश

(69वें गणतंत्र दिवस पर वेटनरी विश्वविद्यालय में आयोजित समारोह में कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा के उद्‌बोधन के अंश यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं।)

प्रो. बी.आर. छीपा

प्रिय, छात्र–छात्राओं, कर्मचारियों, अधिकारियों, शिक्षक बंधुओं और भाइयों –बहनों।

69वें गणतंत्र दिवस की आप सबको बधाई देता हूं। देश के कर्णधारों और शहीदों की बदौलत हम आजाद हुए और यहां विश्व का सबसे बड़ा और लिखित संविधान लागू होकर गणराज्य घोषित हुआ। हमने 69 वर्ष के गौरवशाली अतीत में चुनौतियों का एकजुट होकर सामना किया। यह देश तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है जिसमें किसानों, जवानों, वैज्ञानिकों, युवाओं और जनप्रतिनिधियों का योगदान है। आज के पावन दिवस पर मैं, सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों, कर्मचारियों, अधिकारियों से एक संकल्प लेने का आग्रह करता हूं कि जो सैनिक भाई देश की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर करते हैं, उनके परिवारजनों का ध्यान रख कर पूरा सहयोग करें।

कृषि और पशुपालन देश के सत्तर फीसदी लोगों के जीवन का आधार है। इस क्षेत्र के विकास की चुनौती हमारे कंधों पर है। कृषि और पशु वैज्ञानिकों ने अतीत में भी हरित और श्वेत–क्रांति से देश को खाद्यान्न और दुग्ध उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाया है। परिवर्तित समय में नई तकनीक और प्रौद्योगिकी विकास कर इसे जमीन तक क्रियान्वित करने से ही खुशहाली लाई जा सकती है।देश के इस युवा वेटरनरी विश्वविद्यालय ने कम समय में शिक्षण और शोध कार्यों के बलबूते राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की है जिसके लिए मैं, आपको हार्दिक बधाई देता हूं। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, अनुसंधानवेताओं, शिक्षकों और अधिकारियों के मिले–जुले प्रयासों से सांस्कृतिक, खेलकूद, एन.सी.सी. जैसी गतिविधियों के साथ ही देशी गोवंश नस्ल सुधार, पशुचिकित्सा एवं उपचार की आधुनिक सेवाएं और शोध कार्यों में भी अपनी योग्यता का परिचय दिया है। किसान–पशुपालक प्रशिक्षण कार्यक्रमों और उपयोगी साहित्य का प्रकाशन राष्ट्रभाषा ''हिन्दी'' में किया जाना अत्यंत प्रशंसनीय है। देश के ख्यातनाम विश्वविद्यालय के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में ज्यादा से ज्यादा सीखें, अपने ज्ञान का उपयोग करके देश और समाज के विकास में अपनी महत्ती भूमिका निभाएं। जयहिन्द!

69वें गणतन्त्र दिवस पर राजुवास में आयोजित समारोह में कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने ध्वजारोहण कर सलामी दी। इस अवसर पर कुलपति प्रो. छीपा ने 76 जनों को उत्कृष्ट कार्यों एवं उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए प्रंशसा-पत्र पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह में देश भक्ति से ओतप्रोत गीत और नृत्य की मनभावन प्रस्तुतियां भी दी गई। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता एवं संकायाध्यक्ष प्रो. त्रिभवुन शर्मा, कुलसचिव प्रो. हेमन्त दाधिच, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. एस.सी. गोस्वामी सहित डीन-डायरेक्टर अधिकारी, कर्मचारी छात्र-छात्राएं एवं उनके परिजनों ने समारोह में शिरकत की।

मुख्य समाचार

सांभर (जयपुर) के 47 किसानों ने डेयरी और पोल्ट्री तकनीकों की ली जानकारी

सांभर पंचायत समिति (जिला जयपुर) के 47 किसानों ने 30 जनवरी को वेटरनरी विश्वविद्यालय का भ्रमण कर पशुपालन और पोल्ट्री की विभिन्न तकनीकों की जानकारी ली। उपनिदेशक कृषि एवं परियोजना निदेशक आत्मा के सौजन्य से अन्तराज्यीय कृषक भ्रमण के तहत किसानों का दल यहां पहुंचा। राजुवास प्रसार शिक्षा निदेशालय के सहायक आचार्य डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा ने पशुधन उत्पादन में नस्ल सुधार के महत्व पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। कृषकों ने डेयरी फार्म में राठी नस्लों के रखरखाव और पोल्ट्री फार्म में डॉ. संजय सिंह द्वारा पालतू पक्षियों, मुर्गी और बतख पालन की तकनीकी और आय बढ़ाने के उपायों की जानकारी दी गई। कृषकों ने तकनीकी म्यूजियम का भी अवलोकन किया।

सीकर जिले के 45 पशुपालकों द्वारा राजुवास का भ्रमण

उपनिदेशक कृषि एवं पदेन परियोजना (आत्मा) सीकर जिले के 45 पशुपालकों ने 10 जनवरी को वेटरनरी विश्वविद्यालय का भ्रमण कर उन्नत पशुपालक तकनीकों की जानकारी ली। अन्तर राज्यीय कृषक भ्रमण के तहत राजुवास डेयरी में राठी स्वदेशी गौवंश के संवर्द्धन और डेयरी उत्पाद कार्यों का जायजा लिया। पोल्ट्री फॉर्म में पशु–पक्षियों के रखरखाव और उनके व्यावसायिक महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी। राजुवास तकनीकी म्यूजियम में पशुओं की शल्य चिकित्सा और उन्नत पशुपालन तकनीकों को मॉडल और रंगीन फोटोग्राफ्स के माध्यम से जाना और समझा।

बीछवाल में पशुपालक शिविर सम्पन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु विविधिकरण सजीव मॉडल द्वारा 20 जनवरी को ग्राम बीछवाल में एक दिवसीय ऑफ कैम्पस ट्रेनिंग ''शीत ऋतु में विभिन्न पशुओं का प्रबंधन एवं देखभाल'' विषय पर आयोजित की गई। परियोजना की प्रमुख अन्वेषक प्रो. बसंत बैस ने बताया कि प्रशिक्षण शिविर में 60 पशुपालकों ने भाग लिया। प्रशिक्षण शिविर में डॉ. सी.एस. ढाका ने शीत ऋतु में पशुओं की विभिन्न बीमारियों के लक्षण, उपचार व रोकथाम के बारे में जानकारी दी। प्रशिक्षण सत्र की समाप्ति पर बीछवाल ग्राम के मुकनाराम ने भाग लेने वाले पशुपालकों का आभार जताया।

डूंरगपुर जिले 40 किसानों द्वारा राजुवास का भ्रमण

उपनिदेशक कृषि एवं पदेन परियोजना (आत्मा) डूंगरपुर जिले के 40 किसानों ने 18 जनवरी को वेटरनरी विश्वविद्यालय का भ्रमण कर उन्नत पशुपालन तकनीकों की जानकारी ली। अन्तर राज्यीय कृषक भ्रमण के तहत राजुवास डेयरी में राठी स्वदेशी गौवंश के संवर्द्धन और डेयरी उत्पाद कार्यों का जायजा लिया। सहायक प्राध्यापक डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा ने किसानों को ''उन्नत पशुपालन में तकनीकों के महत्व'' पर व्याख्यान देकर भ्रमण करवाया। पोल्ट्री फॉर्म में पशु–पक्षियों के रखरखाव और उनके व्यावसायिक महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी। राजुवास तकनीकी म्यूजियम का अवलोकन कर फोटोग्राफ्स के माध्यम से जाना और समझा।

जैविक पशु उत्पादों के विपणन पर 87 उद्यमियों की कार्यशाला संपन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय के जैविक पशुधन उत्पाद तकनीक केन्द्र द्वारा जैविक पशु उत्पाद और उनके विपणन तथा पश्चिमी राजस्थान में इसके विस्तार पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 21 जनवरी को किया गया। प्रमुख अन्वेषक डॉ. विजय बिश्नोई ने बताया कि कार्यशाला में 87 उद्यमियों और व्यवसाईयों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने कहा कि ज्यादा मुनाफे के लालच में पड़कर हमारे किसानों व व्यापारियों ने बहुत ज्यादा रासायनिक पदार्थों का उपयोग करना शुरू कर दिया जिससे हमारे स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है, हमें इससे बचना होगा। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने जैविक पशु उत्पादों के महत्व, विपणन व भविष्य के परिपेक्ष की जानकारी दी। प्रो. बंसत बैस ने जैविक पशु उत्पादों की पश्चिमी राजस्थान में संभावनाओं के बारे में बताया। डॉ. दिनेश जैन ने जैविक दुग्ध उत्पादों के विपणन की जानकारी दी। डॉ. विजय कुमार ने जैविक पशु उत्पादों के प्रमाणीकरण व विपणन के बारे में बताया। कार्यशाला में व्यापार मंडल के अध्यक्ष जगदीश पेड़ीवाल, कुलसचिव प्रो. हेमंत दाधीच, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. एस.सी. गोस्वामी, अनुसंधान निदेशक प्रो. आर.के. सिंह, प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह व पूल ऑफिसर प्रो. विजय कुमार चौधरी ने भाग लिया।

पश्चिमी क्षेत्रिय कृषि मेला, जोधपुर

राजुवास प्रदर्शनी का सैंकड़ों किसानों द्वारा अवलोकन

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर और कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत–सरकार के संयुक्त तत्वावधान में 28–31 जनवरी, 2018 को पश्चिमी क्षेत्रिय कृषि मेले का आयोजन कृषि विश्वविद्यालय, मण्डोर, जोधपुर में किया गया। मेले में वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालकों एवं कृषकों के उपयोगी प्रदर्शनी स्टॉल लगाई गई। स्टॉल में किसानों एवं पशुपालकों ने विभिन्न पशुपालन की तकनीकों, देशी गोवंश के संरक्षण और चारा उत्पादन कार्यो की जानकारी ली। खाद्य एवं जन वितरण और उपभोक्ता मामलात राज्य मंत्री श्री सी.आर. चौधरी, मिजोरम के पूर्व राज्यपाल श्री ए.आर. कोहली, राज्य सभा सांसद श्री नारायण पंचारिया ने राजुवास प्रदर्शनी का अवलोकन कर उसके कार्यो की सराहना की। सह आचार्य डॉ. सूदीप सोलंकी सहित डॉ. अमित चोटिया एवं डॉ. महेन्द्रपाल पूनियां ने किसानों को पशुपालन की उन्नत तकनीकों के बारे में बताया।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 6, 9, 11, 16, 20, 22, 23 एवं 24 जनवरी को गांव बरडादास, लुटाना राजू, सेऊवा, सारसर, रिड़खला, भगेला, देपालसर एवं नैयासर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 277 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ केन्द्र द्वारा 285 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 5, 10, 24 एवं 25 जनवरी को गांव नीरवाना, 2 KSR, आरिंया एवं इटा गांवा में तथा 1, 3 एवं 8 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 285 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 9, 11, 12, 19, 20 एवं 23 जनवरी को गांव विछोला भागली, मीरपुर, वालोरिया, माण्वाडा खालसा, निचलागढ़ एवं पिटारी पादर गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 197 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 6, 11, 15, 17, 18, 19, 20 एवं 22 जनवरी को गांव चोलुखां, दुजार, बादेड़, चुगनी, फोगड़ी, माणकसर, दीनदारपुरा एवं मोडियावट गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 247 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा 6 पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 4, 16, 17, 18, 19 एवं 24 जनवरी को गांव बोगला, दांतड़ा, बुद्यवाडा, देवनगर, पुष्कर एवं तिलोनिया गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 176 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा 316 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 10, 12, 16, 17, 18, 19, 20 एवं 22 जनवरी को गांव थानागांव, सुदंरपुर, अगनियां–फला, काकरादरा, घामड़ी, घामड़ी–आहड़ा, दमड़ी, दाबेला गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 316 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 8, 9, 11, 12, 16, 18, 19, 20, 23, 25 एवं 29 जनवरी को गांव नसबाड़ा, पीपला, तालफरा, मई, बंधाचौथ, जीवद, आसुका, पाठका, खेस्ती, नया नगला एवं सुन्हेरा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण एवं गोष्ठी तथा 31 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 24 महिला पशुपालक सहित कुल 282 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण शिविर आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 8, 12, 16, 20, 24, 25, 29 एवं 30 जनवरी को गांव दूनी, सरोली, बंथली, कनवाड़ा, दुर्गापुरा, श्यावता, जूनिया एवं देवपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 246 पशुपालकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 6, 10, 12, 17, 23 एवं 24 जनवरी को गांव सुलेरा, मोखमपुरा, खिलेरिया, नाथवाना, भादवा एवं उदाना गांवों में तथा दिनांक 19 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 231 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 9, 10, 12, 15, 16, 17, 18, 25 एवं 27 जनवरी को गांव झालरी, गोपालपुरा, उमरेडी, पडासलिया, रंगपुर, रूगी, शोली, छिपरदा एवं जाखोड़ा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 291 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 4, 6, 11, 12, 18 एवं 20 जनवरी को गांव बामनिया, मेहमूद गन्ज, नीरगढ़, सेमलिया, डेलवास एवं चारलिया गडिया गांवों में तथा दिनांक 9, 16 एवं 23 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 244 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा 471 पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 4, 5, 6, 8, 9, 11, 12, 15, 17, 18 एवं 19 जनवरी को गांव मुगरवा, भधियाना, सखवारा, कंचनपुर, मछरिया, आंगई, खरगपुर, नगईया, गोपाली का अड्डा, मुसलपुर एवं इन्दोली गांवों में तथा दिनांक 25 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 471 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा गोष्ठी एवं प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 9, 10, 11, 12, 19 एवं 20 जनवरी को गांव कानसर, बरमसर, धन्नासर, रामगढ़, पिचकराई एवं घोटड़ा पटा में तथा दिनांक 1–4, 15–18 एवं 22–25 जनवरी को कृषि विज्ञान केन्द्र परिसर में एक दिवसीय एवं चार दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 253 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

भेड़-बकरिओं में कंटाजियस एक्थिमा रोग

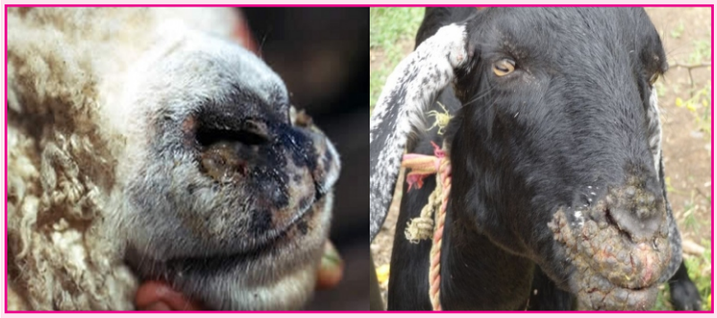

कंटाजियस एक्थिमा अथवा ओर्फ एक विषाणुजनित छूत का रोग है जो मुख्य रूप से बकरी एवं भेड़ों को प्रभावित करता है। यह रोग वयस्क पशुओं की तुलना में छोटे मेमनों व बकरी के बच्चों को ज्यादा प्रभावित करता है। यह रोग जंगली पशुओं में भी होता है और कभी कभी मनुष्यों में भी यह संक्रमण हो सकता है। सर्दी के समय यह रोग ज्यादा देखने को मिलता है ।

इस रोग में शुरुआत में बहुत तेज बुखार आता है, फिर पशु के होठों व नजदीकी त्वचा पर छोटी छोटी फुंसियां हो जाती है जो बाद में बड़ी हो जाती है और बहुत दर्द होता है। उसके उपरांत इन फुंसियों में पानी भर जाता है जिसमें बाद में मवाद भी भर जाता है। इसके कुछ समय बाद इन पर खुरंट बन जाता है । इन फुन्सिओं के कारण छोटे बच्चे दूध नहीं चूंघ पाते है और कमजोर होकर उनकी मौत हो जाती है। बड़े पशुओं को भी चरने–पीने में काफी तकलीफ होती है और वे कमजोर हो जाते है। इस तरह की फुंसियां पशु के चेहरे, मुंह के अन्दर, योनी मार्ग, थनों पर व खुरों के बीच में भी हो जाती है। पैरों पर ज्यादा फुंसिया होने से पशु में लंगड़ापन भी आ जाता है। यदि इन घावों की ठीक से साफ–सफाई न रखी जाये तो इनमें जीवाणुओं से संक्रमण हो जाता है जो पशु को काफी परेशान करता है।

उपरोक्त लक्षण दिखाई देने पर पशुपालक इस रोग को आसानी से पहचान सकते हैं। इस रोग से बचाव के लिए टीका उपलब्ध नहीं है लेकिन कुछ सावधानियां रख कर अन्य स्वस्थ पशुओं को संक्रमित होने से बचाया जा सकता है। रोग ग्रस्त पशु को अन्य स्वस्थ पशुओं से तुरंत अलग कर दें, जिन पशुओं के थनों में फुंसिया हो उन से बच्चों को दूध नहीं पिलाना चाहिए, थनों के घावों को भी सावधानी से साफ कर एंटीबायोटिक मलहम लगा देनी चाहिए ताकि थनेला रोग से बचाव किया जा सके। बुखार के समय व कंटाजियस एक्थिमा रोग के पश्चात जीवाणु के संक्रमण से बचाव के लिए निकटतम पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें।

–प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

बकरियों में प्लेग रोग

इस रोग को बकरी प्लेग/पी.पी.आर/पेस्टी डेस पेटिटस इन रूमिनेन्टस /स्यूडो रिण्डरपेस्ट/काटा के नाम से भी जाना जाता है। भारत में 1987 में तमिलनाडु में यह रोग देखा गया, इसके पश्चात उतरी भारत में यह रोग महामारी के रूप में फैला। वर्ष 2012 में हुई पशुगणना के आधार पर भारत में भेड़ों व बकरियों की कुल संख्या क्रमशः 65.06 मिलीयन व 135.17 मिलीयन है जो कि विश्व में उपस्थित भेड़ों व बकरियों का क्रमशः 16.1 व 6.4 प्रतिशत है। बकरियां ज्यादातर समाज के कमजोर व गरीब वर्ग द्वारा पाली जाती है इसलिए यह बीमारी मुख्यतः गरीब मजदूरों, छोटे व मध्यम वर्गीय किसानों को ज्यादा प्रभावित करती है जिनका आजीविका का मुख्य साधन भेड़ व बकरी पालन है। डबल्यू.एच.ओ. ने इस रोग को सूचनात्मक रोगों की सूची में रखा है व अर्न्तराष्ट्रीय संस्था (एफ.ए.ओ. व ओ.आई.ई.) ने 2030 तक पूरे विश्व को इस रोग से मुक्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

रोग का कारण :– यह रोग एक विषाणु (मोरबिलि विषाणु) जनित रोग है। यह एक तीव्र गति से फैलने वाला संक्रामक रोग है।

रोग से नुकसान :– यह रोग भेड़ व बकरी में फैलता है। भेड़ की तुलना में बकरियों मे यह रोग अधिक होता है। यह रोग हर उम्र और लिंग की बकरियों को ग्रसित कर सकता है लेकिन मेमनों में मृत्युदर अधिक होती है। इस रोग में बकरियों की मृत्यु बहुत तेजी से होती है इसीलिए इस रोग को बकरी प्लेग के नाम से जाना जाता है। अधिक मृत्युदर होने की वजह से यह रोग आर्थिक रूप से बहुत हानिकारक है। एक अनुमान (सिंह, 2012) के अनुसार इस रोग के कारण भारत में सालाना 180 करोड़ रूपये का नुकसान होता है।

रोग का फैलाव :– यह रोग वर्षा व सर्द ऋतु में होता है। इस रोग का विषाणु बीमार पशु के द्वारा उत्सर्जित मल, मूत्र, आंख, नाक व मुंह से होने वाले स्त्राव में प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहता है, अतः रोगी पशु के स्वस्थ पशु के सम्पर्क में आने तथा स्वस्थ पशु के संक्रमित आहार व संक्रमित पानी के ग्रहण करने से यह रोग फैलता है। यह विषाणु स्वस्थ पशु के शरीर में मुख्यतः सांस लेने के दौरान संक्रमित हवा के द्वारा प्रवेश करते हैं परन्तु यह विषाणु कजंगक्टाईवा (आंख) द्वारा तथा मुंह द्वारा संक्रमित आहार से भी प्रवेश कर सकता है।

रोग के लक्षण :–

1. रोगी पशु को तेज बुखार (1050 फारनेहाईट) हो जाता है जो 4 से 5 दिन तक रहता है और पशु खाना पीना बन्द कर देता है।
2. मुंह, मसूड़े, तालू, होंठ व जीभ पर घाव हो जाते हैं जिसकी वजह से प्रचुर मात्रा में तार जैसी लार बहती है।

3. रोगी पशु के होठों पर सूजन आ जाती है व पशु बार–बार होठों को चाटता है।
4. नाक से पानी जैसा स्त्राव बहना शुरू हो जाता है तथा बाद की अवस्था में मवाद युक्त होकर नासिका को अवरूध कर देता है जिससे पशु को सांस लेने में कठिनाई आती है और पशु मुंह से सांस लेने लगता है व पशु के सांस में दुर्गन्ध भी आती है। पशु को खांसी हो जाती है व बाद की अवस्था में अन्य जीवाणुओं व विषाणुओं के द्वारा रोगी पशु को निमोनिया भी हो जाता है।
5. आँख से पानी बहने लगता है व आँखो में सूजन आ जाती है व झिल्ली का रंग गहरा लाल हो जाता है।
6. रोगी पशु को दस्त लग जाते हैं जो लगातार रहते हैं जिससे पशु के शरीर में पानी की कमी हो जाती है और दस्त पेचिस में भी बदल सकते हैं।
7. रोगी ग्याभिन पशु को गर्भपात भी हो सकता है।
8. रोगी पशु का अगर उचित ईलाज न करवाया जाए तो रोग होने के एक सप्ताह के भीतर उसकी मृत्यु हो सकती है।

रोग का निदान :–

1. रोग के क्लिनिकल लक्षणों द्वारा।
2. शव परीक्षण द्वारा शव परीक्षण के दौरान पशु की बड़ी आंत में जेबरा पट्टिया पाई जाती हैं।
3. प्रयोगशाला में विषाणु पृथक्करण (आइसोलेसन द्वारा)
4. प्रयोगशाला में आधुनिक तकनीको द्वारा – एलिसा, वायरस न्यूट्रीलाईजेसन टेस्ट।

बचाव, रोकथाम व उपचार :–

1. टीकाकरण :– चार माह से ऊपर की आयु वाले भेड़ व बकरियों में नवम्बर से फरवरी माह के बीच निकटतम पशु चिकित्सालय में टीकाकरण आवश्यक रूप से करवाना चाहिए जिससे पशु तीन वर्ष तक इस रोग से सुरक्षित रहता है।
2. पशु चिकित्सक की सलाहनुसार रोगी को प्रतिजैविक औषधी देनी चाहिए ताकि द्वितीय जीवाणु जनित बीमारियों को रोका जा सके।
3. रोगी पशु को स्वस्थ पशु से अलग रखना चाहिए तथा उसकी देखभाल भी अलग से करनी चाहिए।
4. पशुओं के आसपास साफ–सफाई का पूरा ध्यान रखना चाहिए ताकि विषाणु का फैलाव न हो। बाड़े में रोगी पशु के दस्त को अच्छी तरह साफ करना चाहिए।

डॉ. राजेश सिंगाठिया, सुशील कुमार मीणा,
सीता राम गुप्ता, एवं मनोहर सैन (मो 8505069065)
वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–फरवरी, 2018

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	नागौर, जोधपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, चूरू, सीकर, उदयपुर, पाली, सिरोही, जैसलमेर
चेचक/माता रोग	भेड़, ऊँट, बकरी	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सिरोही, जैसलमेर, कोटा, बूंदी, पाली
मुँहपका–खुरपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	दौसा, जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, अलवर, बारां, भरतपुर, श्रीगंगानगर, नागौर, सीकर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, टोंक, जोधपुर, जैसलमेर, पाली
लंगड़ा बुखार/ठप्पा रोग	गाय	चित्तौड़गढ़, हनुमानगढ़, जयपुर, जैसलमेर, सीकर, बीकानेर
गलघोंटू	गाय, भैंस	जयपुर, चित्तौडगढ, पाली, टौंक, भरतपुर, उदयपुर, अलवर, भीलवाड़ा, दौसा, टोंक, सीकर, जैसलमेर, झालावाड़
न्यूमोनिक पास्चुरेल्लोसिस	गाय, भैंस	सीकर, नागौर, अलवर, झुन्झुनु, सवाईमाधोपुर, भरतपुर, जयपुर, हनुमानगढ़
प्लूरोन्यूमोनिया	बकरी	सीकर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, जोधपुर, जयपुर
थिलेरियोसिस	गाय, भैंस	चित्तौड़गढ़, बीकानेर, बांसवाडा, बूंदी
बबेसियोसिस (खून मूतना)	गाय, भैंस	धौलपुर, बूंदी, डूंगरपुर, बीकानेर, सीकर, चित्तौड़गढ़, जैसलमेर
सर्रा (तिबरसा)	भैंस, ऊंट	धौलपुर, श्रीगंगानगर, भरतपुर, हनुमानगढ़, कोटा, सीकर, डूंगरपुर, बारां
अन्तः परजीवी (एम्फीस्टोमीयेसिस, फेसियोलियेसिस)	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	भरतपुर, उदयपुर, कोटा, धौलपुर, डूंगरपुर, हनुमानगढ़, सवाईमाधोपुर, सीकर, बूंदी, झालावाड़
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्सीयस ब्रोंकाइटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

पशुओं में यूरिया की विषाक्तता: उपचार एवं बचाव

किसानों एवं पशुपालकों द्वारा यूरिया का उपयोग फसलों में उर्वरक एवं पशुओं के राशन में फीड सप्लीमेंट के रूप में किया जाता है। जुगाली करने वाले पशुओं के संपूर्ण राशन में 2–3 प्रतिशत भाग NPN (गैर प्रोटीन–नाइट्रोजन) के रूप में यूरिया मिलाकर पूरा किया जाता है जिसे सर्वसुलभ एवं सस्ते प्रोटीन का विकल्प माना गया है। यूरिया रुमेन मैक्रोफ्लोरा द्वारा यूरिएज एंजाइम की उपस्थिति में विघटित होकर अमोनिया एवं जल का निर्माण करता है। पशु के शरीर में इस अमोनिया से प्रोटीन का निर्माण होता है और पशुओं को लाभ पहुंचाता है। परन्तु रुमेन में अमोनिया का स्तर एक सीमा से अधिक की वृद्धि नुकसानदायक हो सकती है। अत्यधिक अमोनिया क्रेब–साईकल को अवरोधित कर कोशिकाओं के श्वसन दर पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इस स्थिति में यूरिया के विषाक्त लक्षणों का प्रभाव केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

यूरिया विषाक्तता के कारण

पशुपालकों द्वारा अक्सर यूरिया–मोलासेस मिक्सचर को जानवरों के राशन में इस्तेमाल किया जाता है, फिर भी निम्न परिस्थितियों में यूरिया की विषाक्तता पशुओं में हो सकती है :

1. अचानक या शुरूआती राशन में ही उच्च गुणवत्ता वाले यूरिया उत्पादों का अनियमित उपयोग।
2. यूरिया–मोलासेस मिक्सचर का अधिक मात्रा में प्रयोग
3. गीले यूरिया पूरकों का उपयोग
4. पशुओं का यूरिया उर्वरक को चाटना या खाना

यूरिया विषाक्तता को प्रभावित करने वाले कारक

जुगाली करने वाले पशुओं में इसके विषाक्त लक्षणों की तीव्रता को प्रभावित करने वाले कारक निम्न हैं:

1. पशुओं द्वारा खाए जाने वाले राशन की संरचना एवं मात्रा : यदि पशु के आहार में कैलोरी (ऊर्जा) की कमी हो तो यूरिया के उपापचयन की क्षमता घट जाती है। मूल रूप से 0.1 ग्राम यूरिया/किग्रा. शारीरिक भार प्रतिदिन या लगभग 400 किलोग्राम के वयस्क गोवंश हेतु 35–40 ग्राम यूरिया प्रतिदिन देना ही उचित है। गोवंशों हेतु 0.3–0.5 ग्राम यूरिया/किग्रा शारीरिक भार/दिन को विषकारी एवं 1–1.5 ग्राम यूरिया/किग्रा शारीरिक भार/दिन को घातक तथा जानलेवा माना गया है।

2. यूरिएज एंजाइम की उपस्थिति एवं रुमेन के pH की संरचना : यूरिया की विषाक्तता रुमेण में अमोनिया गैस के बनने एवं रुधिर वाहिकाओं द्वारा रक्त में अवशोषित होने की मात्रा और रुमेण के pH के स्तर पर निर्भर करती है। इसे इस प्रकार समझा जा सकता है :–

क. pH<5 ; या pH<4- अमोनिया गैस का अमोनिया पदार्थ (जल में घुनलशील) में परिवर्तन होना। विषाक्तता के लक्षणों का अस्पष्ट होना।

ख. pH<6.2- अमोनिया गैस का घुलनशील एवं रक्त में कम अवशोषित अमोनियम पदार्थ में बदलना।

ग. pH<9- अमोनियम गैस और अमोनियम पदार्थ का अनुपात 1 हो जाना। अमोनिया गैस का अवशोषण रुधिर द्वारा अधिक होना। विषाक्तता के लक्षणों का स्पष्ट दिखाई देना।

पुनः निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा अमोनिया गैस का स्तर व उसके प्रभावों को दर्शाया गया है–

अ. अमोनिया गैस की सांद्रता जब 0.8 मिलीग्राम/डेसीलीटर से अधिक हो : रक्तनलिकाओं पर विपरीत प्रभाव।

आ. जब सांद्रता 0.8–1.3 मिलीग्राम/डेसीलीटर के बीच हो : विपरीत लक्षणों का स्पष्ट प्रभाव दिखना।

इ. जब सांद्रता 5.0 मिलीग्राम/डेसीलीटर या उससे अधिक हो : पशुओं का मृत अवस्था में पाया जाना।

यूरिया विषाक्तता के लक्षण व इसकी पहचान : मूलतयाः यूरिया विषाक्तता के लक्षणों में स्पष्ट संकेतक के रूप में पेट फूलना, आफरे जैसी स्थिति, पेट दर्द के लक्षण, तेजी से सांस लेना, कमजोरी के लक्षण, पशुओं का हिंसक हो जाना, कान एवं चेहरे की मांसपेशियों में ऐंठन, फेनिल लार का श्रावित होना, दांतों का पिसना इत्यादि है। गंभीर अवस्था में हृदय–गति का मंद पड़ना, नाड़ी–दर व श्वसन–दर असमान्य व गिरावट होना शामिल है। मरणासन्न अवस्था में पशु जोर–जोर से छटपटाता है एवं भिन्न भिन्न तरह की आवाजें निकालता है। अधिकांश परिस्थितियों में जानवर यूरिया–पूरकों के बोरे या गठरी के इर्द–गिर्द ही मृत प्रायः अवस्था में पाए जाते हैं।

1. जानवरों के राशन में यूरिया पूरकों की उपस्थिति एवं उसके द्वारा किये गए भोजन में यूरिया की मात्रा का संभावित अनुमान लगाना
2. विषाक्तता के लक्षणों की समुचित जांच
3. गोवंश के मरणोपरांत तुरन्त एकत्रित रक्त में यूरिया/अमोनिया के स्तर एवं रुमेन द्रव्य के pH का प्रयोगशाला में जांच की सुविधा का उपलब्ध होना
4. पोस्टमॉर्टेम में मिली जानकारी का ऊपर बताये तथ्यों से तालमेल स्थापित करना

यह गौर करने योग्य तथ्य है कि प्रभावित परन्तु केवल जीवित पशुओं से लिया गया रक्त ही अमोनिया के स्तर की समुचित मात्रा/स्तर दर्शाता है, क्योंकि मरणोपरांत रक्त में प्रोटीन का विघटन अत्यंत तीव्रता से होकर अधिकतम अमोनिया का उत्पादन होता है। साथ ही रक्त में अमोनिया का स्तर जांचने हेतु सैंपल का फ्रोजेन स्टेट (जमी हुई अवस्था) में रहना अनिवार्य है। हालांकि पोस्टमॉर्टेम जांच में कोई विशेष लक्षण उभरकर सामने नहीं आ पाते, परन्तु रुमेन से अमोनिया गैस का रिसाव होना यूरिया विषाक्तता का एक प्रमुख संकेतक है।

उपचार एवं बचाव : यूरिया विषाक्तता से प्रभावित पशुओं का शीघ्रताशीघ्र उपचार ही प्रभावी सिद्ध होता है। आफरे की स्थिति में ट्रोकार से या पेट में चीरे लगाकर रुमेन से गैस को निष्कसित किया जाता है। प्रभावित पशुओं को उचित मात्रा में ठंडे पानी एवं विनेगर (सिरका) का सेवन कराने से लाभ मिलता है। नियमानुसार एक वयस्क गोवंश हेतु 40–45 लीटर पानी व 2–6 लीटर 5% एसिटिक अम्ल (विनेगर/सिरका) का प्रयोग फलदायी सिद्ध होता है। मूलतया इससे रुमेन के पदार्थों को तनु होने व क्षारीयता प्रदान करने में सहायता मिलती है जिससे अमोनिया का उत्पादन–दर कम हो जाता है।

पशुपालकों द्वारा पशुओं को यूरिया विषाक्तता से बचाव हेतु निम्नांकित बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक है :

1. पशुओं को यूरिया–पूरकों को खिलाने की शुरुआत करने से पहले शुद्ध साधारण नमक का आहार मिश्रित कर खिलाना चाहिए। धीरे–धीरे यूरिया देना शुरु करें और उसकी मात्रा धीरे–धीरे बढ़ाएं। एक बार यूरिया पूरक देना बंद करने की स्थिति में पुनः न्यूनतम स्तर से इसकी शुरुआत करनी चाहिए।
2. गीले यूरिया पूरकों के इस्तेमाल से बचना चाहिए। बारिश के मौसम में इसका विशेष ध्यान रखें।

यदि पशु यूरिया–ब्लोक्स या यूरिया–श्रोत के इर्दगिर्द ही मृत–अवस्था में पाए जाएं तो जांच की दिशा यूरिया विषाक्तता की ओर ले जाकर अन्य प्रभावित पशुओं का उचित उपचार कराना चाहिए।

डॉ. अमिता रंजन, (मो. 9462471644)
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

देशी मुर्गों की नस्ल को जानें : कड़कनाथ

कड़कनाथ भारत का एक मात्र काले मांस वाला चिकन है। इसे स्थानीय रूप से ''कालामासी'' नाम से जाना जाता है, जिसका अर्थ काले मांस (फ्लैश) वाला मुर्गा है। मध्यप्रदेश के झाबुआ और धार जिले तथा राजस्थान और गुजरात के निकटवर्ती जिले (लगभग 800 वर्ग मील में फैले हुए है) इस नस्ल का मूल गृह माना गया है। इनका पालन ज्यादातर जनजातीय, आदिवासी तथा ग्रामीण निर्धनों द्वारा किया जाता है। पुराने मुर्गे का रंग नीले से काले के बीच होता है जिसके पीठ पर गहरी धारियां होती हैं। इस नस्ल का मांस काला और देखने में विकर्षक (रीपल्सिव) होता है इसे सिर्फ स्वाद के लिए ही नहीं बल्कि औषधीय गुणवत्ता के लिए भी जाना जाता है। शोध के अनुसार इसके मीट में सफेद चिकन के मुकाबले कोलेस्ट्राल का स्तर कम और अमीनो एसिड का स्तर ज्यादा होता है। इसका मांस, चोंच, जुबान, टांगे, चमड़ी आदि सब कुछ काला होता है। यह प्रोटीन युक्त होता है और इसमें वसा नाम मात्र की पाई जाती है। कहते हैं कि दिल और डायबिटीज के रोगियों के लिए कड़कनाथ बेहतरीन दवा है। इसके अलावा कड़कनाथ को सेक्स वर्धक भी माना जाता है। इसके रक्त का उपयोग आदिवासियों द्वारा मानव के गंभीर रोगों के उपचार में किया जाता है। इसका अंडा प्रोटीन एवं आयरन का अच्छा स्त्रोत है। यह मुर्गा दरअसल अपने स्वाद और सेहतमंद गुणों के लिए अधिक मशहूर है। कड़कनाथ मुर्गे की प्रजाति के तीन रूप होते हैं। पहला जेट ब्लैक, इसके पंख पूरी तरह से काले होते हैं। पैसिल्ड कड़कनाथ, इस मुर्गे के पंख पर पैसिंल की तरह शेड नजर आते हैं। गोल्डन कड़कनाथ, इस मुर्गे के पंख पर गोल्डन छींटे दिखाई देते हैं। काले रंग की कड़कनाथ मुर्गी का एक अंडा 50 रूपये की कीमत वाला होता है। मुर्गी और मुर्गे का विक्रय मूल्य ब्रॉयलर के मुकाबले करीब दोगुना है।

सफलता की कहानी | गोपालराम बने एक सफल गोपालक

पशुपालन हमेशा से राजस्थान के किसानों का कृषि के साथ–साथ आय का एक मुख्य साधन रहा है। वर्तमान में जहां बेरोजगारी की समस्या ने विकराल रूप धारण कर रखा है ऐसे में पशुपालन व्यवसाय में स्वरोजगार के अवसर युवाओं के लिए अपार संभावनाएं लिए हुए है। गोपालन को अपनी आय का स्त्रोत बनाकर सफल हुए गोपालक गोपालराम ने नव युवकों के लिए एक मिसाल कायम की है। गोपालराम बीकानेर जिले के लूनकरणसर तहसील के सुरनाणा गांव के निवासी हैं। पिता श्री माणक राम भूंआल भी पशुपालन से जुड़े हुए हैं। गोपालराम ने पशुपालन व्यवसाय को वैज्ञानिक तरीके से करने की सोची और पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र लूनकरणसर द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भाग लिया। इन प्रशिक्षणों से गोपालराम को काफी फायदा हुआ। प्रशिक्षण के दौरान कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण मिश्रण की उपयोगिता, टीकाकरण, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, पशुओं में नस्ल सुधार द्वारा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, भूसे को यूरिया उपचारित करने का ज्ञान, सन्तुलित आहार आदि की जानकारी प्राप्त कर उसे अपनाया और एक सफल पशुपालक बने। वर्तमान में 10 बीघा सिंचित व 60 बीघा असिंचित खेती की जमीन के साथ इनके पास राठी व साहीवाल नस्ल की 22 गायें, 10 वयस्क मादा पशु व 13 बछड़े–बछड़िया के साथ–साथ एक–एक राठी व साहीवाल नस्ल का उन्नत सांड है। इससे प्रतिदिन 160–170 लीटर दुग्ध उत्पादन करते हैं। वे उन्नत नस्ल की गायें तैयार करके विक्रय भी करते हैं। इनके द्वारा तैयार किये हुए उन्नत पशुओं ने पशुपालन विभाग द्वारा आयोजित जिला स्तरीय पशु मेले में प्रथम पुरस्कार भी प्राप्त किया हैं। इनकी पशुपालन से वार्षिक आय 8 लाख रूपये तक हो जाती है। गोपालराम एक जागरूक पशुपालक के रूप में वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत बने हैं। **(सम्पर्क–गोपालराम मो. 9950536754)**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

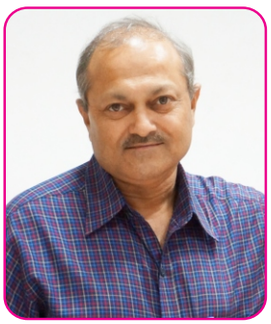

निदेशक की कलम से...

सर्दियों में दुधारू पशुओं का आहार संयोजन

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाई और बहनों !

सर्दी के मौसम में पशुओं को अपने शरीर का तापमान बनाए रखने के लिए ऊर्जा, प्रोटीन व अन्य पोषक तत्वों की जरूरत बढ़ जाती है। कड़ाके की ठंड या शीत लहर के प्रकोप से पशुओं की ऊर्जा की जरूरत 100 फीसदी तक बढ़ जाती है। इन परिस्थितियों में पशु की उम्र, शरीर की अवस्था (जैसे गर्भकाल, दुग्धकाल या शुष्ककाल), नस्ल और प्रबंधन के अनुसार ही अतिरिक्त आहार दिया जाना चाहिए। सामान्यतः देशी पशुओं को 8–10 किलोग्राम आहार की प्रतिदिन आवश्यकता होती है। इस समय दाना मिश्रण की अतिरिक्त मात्रा दी जानी चाहिए। पशुओं को दिए गए रेशेदार आहार दूध में वसा का प्रतिशत बढ़ाने में सहायक होते हैं। दाना मिश्रण में मोटे तौर पर खल, चूरी, चापड़ और दला हुआ धान में 2 प्रतिशत खनिज लवण मिश्रण और 1 प्रतिशत नमक शामिल करें। दला हुआ धान, खल, चना, ग्वार, बिनौला जैसे दाना मिश्रण रात को पानी मे भिगोकर रखें और सुबह इन्हें ताजा पानी में उबालें। अधिक दुग्ध उत्पादन वाले पशुओं को ये आहार दिन में तीन बार दे सकते हैं। पशुओं को साइलेज देना भी अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए लाभकारी है। सर्दी में उच्च केलोरिक आहार में विटामिन व खनिज लवन मिलाना चाहिए। सांद्र राशन में 2 फीसदी खनिज तत्व और 1 प्रतिशत नमक मिलाना चाहिए। पशु आहार की मात्रा धीरे–धीरे बढ़ानी चाहिए अन्यथा पशु का पाचन बिगड़ सकता है। आहार संयोजन के लिए विषय विशेषज्ञ की सलाह लेकर कार्य करना अधिक लाभकारी होगा। पशुओं को अधिक दलहनी हरा चारा देने से आफरा भी आ सकता है। पशु आहार के सभी संघटकों को सही अनुपात में मिलाकर संतुलित आहार देने से दुग्ध उत्पादन बढ़ता है। **–प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत फरवरी, **2018** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**डॉ. सी. के. मूरड़िया** **9414603580** सेवानिवृत प्रोफेसर, वेटरनरी कॉलेज, नवानियां	पशु प्रजनन से नस्ल सुधार सम्भव	01.02.2018
2	**प्रो. राधेश्याम आर्य** **9116009593** पशुपोषण विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	दुधारू पशुओं के खान–पान का रख–रखाव	08.02.2018
3	**डॉ. रूचि मान** **9530073780** पशु शरीर क्रिया विज्ञान विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	पशुओं की बढ़वार न होने के कारण व उनका निवारण	15.02.2018
4	**डॉ. तरूण प्रीति** **8003388297** वेटरनरी कॉलेज, नवानियां	पशुओं में रक्त परजीवी जनित रोग व उनका बचाव	22.02.2018

मुस्कान !

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। → **1800 180 6224**